पगड़ियाँ भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की पहचान हैं। यह कहानी भारत में पहनी जाने वाली विभिन्न प्रकार की पगड़ियों में से कुछ का अनौपचारिक विवरण है। यहाँ पगड़ियों का मानवीकरण किया गया है, जिसमें वे अपने बारे में एक-एक कर रोचक तरीके से बताती हैं। चमकीले और रंगीन चित्रों से कहानी में जीवंतता आयी है।

Turbans are synonymous with cultural tradition of India. The story is an informational narrative about different kinds of turbans which are commonly worn in India. The turbans have been personified to introduce themselves one by one in an interesting poetic form. Vibrant, striking and colorful illustrations add life to the story.

ISBN: 978-93-81038-87-1

अनोखा संसार

कहानी: मंजू गुप्ता

चित्र: अजंता गुहाठाकुरता

Story Manju Gupta
Illustration Ajanta Guhathakurta
Publisher Room to Read India
Editor Dilip Tanwar
Language Hindi
Edition Second, 2019
Copies 30,000 Copies

अनोखा संसार
An Amazing World

IN-LLP-08-0013

रूम टू रीड, साक्षरता और शिक्षा में लैंगिक समानता को केंद्र में रख कर विकासशील देशों के लाखों बच्चों की ज़िंदगियों में बदलाव के लिए प्रयासरत है। हम स्थानीय समुदायों, सहयोगी संस्थाओं और सरकारों के साथ मिलकर प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में साक्षरता कौशल और पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए काम करते हैं तथा बालिकाओं को माध्यमिक शिक्षा पूरी करने में, जीवन कौशलों को विकसित करते हुए, मदद करते हैं। ताकि वे आगे की पढ़ाई जारी रख सकें और जीवन में सफल हो सकें।

Room to Read seeks to transform the lives of millions of children in developing countries by focusing on literacy and gender equality in education. Working in collaboration with local communities, partner organizations and governments, we develop literacy skills and a habit of reading among primary school children, and support girls to complete secondary school with the relevant life skills to succeed in school and beyond.

Room to Read India Trust,
Office No. 201E (B), 2nd floor, D-21 Corporate Park, Sector-21,
Dwarka, New Delhi-110075
www.roomtoread.org

अनोखा संसार

कहानी: मंजू गुप्ता

चित्र: अजंता गुहाठाकुरता

राजस्थान के एक गाँव में हर साल सीताबाड़ी का मेला लगता है। इस साल मेले में लालचंद ने पगड़ियों की दुकान लगाई। उसने बेचने के लिए तो राजस्थानी पगड़ियाँ रखीं पर दुकान को देश भर में पहने जाने वाली दूसरी पगड़ियों से भी सजाया।

तरह-तरह की पगड़ियों की वजह से इस दुकान की बातें सभी जगह हो रही थीं। मेले में भी और आस-पास के गावों में भी। तरह-तरह की पगड़ियों को देखकर लोग अचरज में थे।

धीरे-धीरे रात गहराने लगी। झूले और मिठाईयों की दुकानें भी बंद होने लगीं। लालचंद भी अब थक चुका था, उसने पगड़ियों की दुकान बंद की और सोने चला गया। अब पगड़ियाँ बिल्कुल अकेली थीं तो चल पड़ा आपस में परिचय का दौर।

राजस्थानी पगड़ी ने कहा-

रंगों से भरी मैं,
फर-फर उड़ी मैं।
राजाओं की आन रही हूँ,
और सभी की शान रही हूँ।

पंजाब की पगड़ी ने नाचते-गाते हुए कहा-
बल्ले-बल्ले !
सरदार की पगड़ी मतवाली,
भंगड़ा मेरे बिना है खाली।

अब सबसे अलग दिख रही सुंदर-सजीली पगड़ी की बारी थी।
उसने कहा-

मैं हूँ दूल्हे की पगड़ी,
मुझे न समझो अगली-पगली।
मैं दूल्हे की शान हूँ,
और बारात की जान हूँ।

नौ हाथ मेरी लम्बाई,
खेतीहरों की शान बढ़ाई।
पहने मुझे देश भर के किसान,
बढ़ा देती हूँ सबकी शान।
सभी पगड़ियाँ उसकी लम्बाई देख कर आँखें
फाड़-फाड़ कर उसे देखती रह गईं।

अब आखिरी पगड़ी जो बड़ी देर से टुकुर-टुकुर सबको देख रही थी। वह मुस्कुराई और बोली-

मोटा-मोटा मेरा सेठ,
तोंद निकाल कर जाता लेट।
पहचाने हैं मुझे सभी,
मैं हूँ मारवाड़ी की पगड़ी।

आधी रात बीत चुकी थी, पर पगड़ियाँ अभी भी अपनी बातों में इतनी मस्त थीं कि उन्हें समय बीतने का आभास ही नहीं हो रहा था। पूरा मेला सो चुका था, पर पगड़ियों की दुकान से बतियाने की आवाज़ें अभी भी आ रही थीं।

सुबह हो गई।

लालचंद सो कर उठा और दुकान का परदा हटा दिया। धीरे-धीरे बच्चों की भीड़ दुकान के सामने इकट्ठी हो गई। लालचंद, पगड़ियाँ और बच्चे सभी बहुत खुश थे।

पगड़ियों की दुकान

कहानी: मंजू गुप्ता
बी. एड. करने के बाद मंजू गुप्ता ने शिक्षा को अपना कार्यक्षेत्र चुना। अपने आरंभिक दिनों में इन्होंने हैदराबाद और ग्वालियर के स्कूलों में बतौर शिक्षिका काम किया और बाद में प्रिंसपल के रूप में भी कार्य किया। भाषा और व्याकरण पर इनकी गहरी पकड़ है। मंजू हमेशा ही बच्चों से सिखने के लिये तत्पर रहती हैं और उनमें शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर करने की सामर्थ्य है। इन्हें ऐसी रचनाएं लिखना भाता है जिसे पढ़कर बच्चे आनंद से भर उठें।

Story: Manju Gupta
Following the completion of her B.Ed., Ms. Manju Gupta went on to work as an English teacher and later as a principal in schools in Hyderabad and Gwalior. She has a remarkable grasp of grammar and language. Ms. Manju possesses a natural instinct to be able to learn "with the child" and has a capacity to enhance the quality of education whenever and wherever required. She enjoys writing and spreading happiness among children.

चित्र: अजंता गुहाठाकुरता
अजंता गुहाठाकुरता ने दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट से ललित कला की पढ़ाई की है। इन्होंने भारत के अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थानों की किताबों के लिए इलस्ट्रेशन और डिज़ाइन का काम किया है। इन्हें २०१२ में इंटरनेशनल बोर्ड ऑन बुक्स फॉर यंग पीपल की ओर से सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर प्रदान किया गया। अजंता चित्रकार हैं और बच्चों के लिए कार्यशालाएं भी करती हैं।

Illustration: Ajanta Guhathakurta
Ajanta Guhathakurta studied fine arts at the College of Art in Delhi and has illustrated and designed books for various leading publishers in India. She was awarded a Certificate of Honor from the International Board on Books for Young People in 2002. Guhathakurta also paints and conducts creative workshops for children.